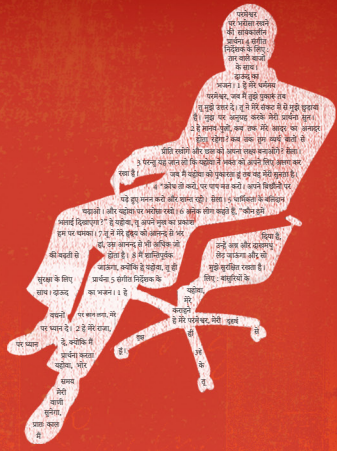

आर.सी. स्प्रोल

सभी हैं ईश्वरविज्ञानी

विधिवत् ईश्वरविज्ञान *का* एक परिचय

अनुमोदन

"क्या आपने कभी चाहा है कि मसीही ईश्वरविज्ञान सरल बना दिया जाए? आर.सी. स्प्रोल के पास यह वरदान है कि वे बातों के महत्व को घटाए बिना उनको सरल बनाते हैं। वे उस पिता के समान हैं जो अपने बच्चे को तैरना सिखा रहा है। वे हमें हमारी क्षमता से अधिक गहरे पानी में ले जाते हैं, परन्तु हमें डूबने नहीं देते हैं। इसलिए मैं आपको आमन्त्रित करता हूँ कि परमेश्वर के ज्ञान के इस जलाशय में प्रवेश करें। यदि आप यह सीखना चाहते हैं कि बाइबल को क्या बात भिन्न बनाती है, परमेश्वर कौन है, ख्रीष्ट क्यों मरा, पवित्र आत्मा किसी व्यक्ति के प्राण में कैसे कार्य करता है, या न्याय के दिन क्या होगा, तो इन पृष्ठों में आप एक बुद्धिमान शिक्षक से स्पष्ट उत्तर को पाएँगे।"

—डॉ. जोएल आर. बीकी
अध्यक्ष और विधिवत् ईश्वरविज्ञान तथा उपदेशकला के प्राध्यापक
प्यूरिटन रिफॉर्म्ड थियोलॉजिकल सेमिनरी, ग्रैण्ड रैपिड्स, मिशिगन

एक युवक ने एक बार मुझसे कहा कि एक रात उसने स्वप्न में ईश्वरविज्ञानियों की सेना को उसकी ओर आते हुए देखा। आर.सी. स्प्रोल सबसे आगे उन सबकी अगुवाई कर रहे थे। जब आप इस पुस्तक को पढ़ेंगे तो आप उस स्वप्न को समझेंगे। क्योंकि इस में वह ईश्वरविज्ञान है जिसकी जड़ें पवित्रशास्त्र में हैं, जो कलीसिया के उत्तम ईश्वरविज्ञानियों द्वारा पोषित है, और इसको ऐसी स्पष्टता और सरलता से समझाया गया है जो एक कुशल ईश्वरविज्ञानी-संचारक की पहचान है।

"क्या आपको इस पुस्तक को पढ़ने के लिए एक ईश्वरविज्ञानी होना आवश्यक है? निस्सन्देह। परन्तु इस शीर्षक का अर्थ यही है: आप एक ईश्वरविज्ञानी हैं—किन्तु बड़ा प्रश्न यह है कि क्या आप एक अच्छे ईश्वरविज्ञानी हैं या नहीं हैं! इसलिए, *सभी हैं ईश्वरविज्ञानी* पुस्तक को पढ़ें, इसमें चिन्ह लगाएँ, और इस पर गहनता से मनन करें। जब आप इसको पढ़ चुके होंगे तो आप निश्चित रीति से और अधिक स्वस्थ तथा और अधिक आनन्दित ईश्वरविज्ञानी होंगे।"

—डॉ. सिन्क्लेएर फर्गसन
शिक्षक
लिग्निएर मिनिस्ट्रीज़

"आर.सी. स्प्रोल एक उत्कृष्ट शिक्षक हैं, जो कठिन ईश्वरविज्ञानीय अवधारणाओं को सरल भाषा में समझाने में निपुण हैं। यहाँ वे विधिवत् ईश्वरविज्ञान के प्रत्येक बड़े भाग को एक संक्षिप्त, सुस्पष्ट, निष्पक्ष रीति से समझाते हैं। यह एक नए विश्वासी से लेकर एक अनुभवी पास्टर तक, सब के लिए एक अति मूल्यवान संसाधन है। यह बात तो सत्य है कि हम सब ईश्वरविज्ञानी हैं। डॉ. स्प्रोल *श्रेष्ठतर* ईश्वरविज्ञानी बनने में हमारी सहायता करते हैं।"

—डॉ. जॉन मकार्थर
पास्टर-शिक्षक, ग्रेस कम्यूनिटी चर्च
अध्यक्ष, द मास्टर्ज़ यूनिवर्सिटी ऐण्ड सेमिनरी,
सन वैली, कैलिफॉर्निया

आर.सी. स्प्रोल ने ईश्वरविज्ञान का एक ऐसा छोटा, विस्तृत सारांश लिखा है जिसे मैं आने वाले कई वर्षों तक की अपनी कक्षाओं में पढ़ने के लिए कहूँगा। यह बाइबलीय रीति से विश्वासयोग्य है, दृढ़ता से धर्मसुधारवादी है, दो हज़ार वर्षों की मसीही परम्परा पर आधारित है, और हमारी सांसारिक संस्कृति के लोगों के मस्तिष्क के लिए महत्वपूर्ण प्रश्नों को सम्बोधित करता है। सदा के जैसे इस बार भी, वे पाठक के ध्यान को खींचे रहते हैं। बहुत समय के लिए मैंने विद्यार्थियों को बर्खोफ *(Berkhof)* की *समरी ऑफ क्रिस्चियन डॉक्ट्रिन (Summary of Christian Doctrine)* नामक पुस्तक को धर्मसुधारवादी विधिवत् ईश्वरविज्ञान के एक विश्वसनीय तथा संक्षिप्त स्रोत के रूप में पढ़ने के लिए दिया है। यह अभी भी बहुत उपयोगी है, परन्तु मैं सोचता हूँ कि इस श्रेणी में किसी और पुस्तक से अधिक अब मैं उन्हें स्प्रोल की *सभी हैं ईश्वरविज्ञानी* पुस्तक पढ़ने के लिए दूँगा। त्रिएकता, पूर्वनिर्धारण, सृष्टि, स्वर्गदूत और दुष्टात्माएँ, स्वर्ग और नरक: ये सब और इनके साथ कई और विषय भी, इस रीति से उचित और विश्वसनीयता से व्यक्त किए गए हैं जो परमेश्वर के लिखित वचन का आदर करती है, और उन लोगों का आत्मिक निर्माण करेगी जो इसके सत्य के प्रति संवेदनशील हैं।

—डॉ. डगलस एफ. केली
ईश्वरविज्ञान के सेवामुक्त प्राध्यापक
रिफॉर्म्ड थियोलॉजिकल सेमिनरी, शारलेट्, नॉर्थ कैरोलायना

आर.सी. स्प्रोल

सभी हैं ईश्वरविज्ञानी

विधिवत् ईश्वरविज्ञान
का एक परिचय

Everyone's a Theologian: An Introduction to Systematic Theology
© 2014 by R.C. Sproul
Originally published in English by Reformation Trust Publishing
a division of Ligonier Ministries
421 Ligonier Court, Sanford, FL 32771

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means—electronic, mechanical, photocopy, recording, or otherwise—without the prior written permission of the publisher, Reformation Trust Publishing. The only exception is brief quotations in printed reviews.
Cover design: Gearbox Studios
Cover illustration: Gearbox Studios
Interior design and typeset: Katherine Lloyd, The DESK

First Hindi Translation and Print 2023
This Hindi edition is issued in arrangement with Ligonier Ministries, USA.
Translated and published by 'For The Truth Press Pvt. Ltd.'
For sales and distribution in India and not for export therefrom.

Hindi ISBN: 978-81-957631-4-6 (Paperback)
Hindi ISBN: 978-81-958502-0-4 (eBook)

For the Truth is a publishing company which exists to print, publish & distribute resources for the Church in India.

प्रथम हिन्दी अनुवाद एवं संस्करण 2023
'सभी हैं ईश्वरविज्ञानी: विधिवत् ईश्वरविज्ञान का एक परिचय' का यह हिन्दी संस्करण
'फॉर द ट्रूथ प्रेस प्राइवेट लिमिटेड' द्वारा अनुवादित एवं प्रकाशित किया गया है।
अधिक संसाधनों के लिए *फॉर द ट्रूथ* की वेबसाइट पर जाएँ:
www.forthetruth.in

forthetruth.in

मेरे परिवार को,
जो सेवकाई के वर्षों में
अत्यधिक प्रेमी और समर्थक रहा है

विषय-सूची

भाग एक: परिचय *(INTRODUCTION)*

अध्याय 1 ईश्वरविज्ञान क्या है?.....3
अध्याय 2 ईश्वरविज्ञान का विषय-क्षेत्र और उद्देश्य.....8
अध्याय 3 सामान्य प्रकाशन और प्राकृतिक ईश्वरविज्ञान.....14
अध्याय 4 विशेष प्रकाशन.....20
अध्याय 5 पवित्रशास्त्र की प्रेरणा और उसका अधिकार.....25
अध्याय 6 अचूकता और त्रुटिहीनता.....30
अध्याय 7 ग्रन्थसंग्रहण.....35
अध्याय 8 पवित्रशास्त्र और अधिकार.....40

भाग दो: ईश्वरविज्ञान विशिष्ट *(THEOLOGY PROPER)*

अध्याय 9 परमेश्वर का ज्ञान.....47
अध्याय 10 सारतत्त्व में एक.....52
अध्याय 11 व्यक्ति में तीन.....57
अध्याय 12 असंचारीय गुण.....61
अध्याय 13 संचारीय गुण.....66
अध्याय 14 परमेश्वर की इच्छा.....71
अध्याय 15 ईश्वरीय-प्रावधान.....76

भाग तीन: नृविज्ञान और सृष्टि *(ANTHROPOLOGY AND CREATION)*

अध्याय 16 *क्रिएशियो एक्स निहिलो*.....87
अध्याय 17 स्वर्गदूत एवं दुष्टात्माएँ.....93
अध्याय 18 मनुष्य की सृष्टि.....99
अध्याय 19 पाप का स्वभाव.....104
अध्याय 20 मूल पाप.....108
अध्याय 21 पाप का प्रसारण.....113
अध्याय 22 वाचाएँ.....120

भाग चार: ख्रीष्टविज्ञान *(CHRISTOLOGY)*

अध्याय 23 बाइबल का ख्रीष्ट.....127
अध्याय 24 एक व्यक्ति, दो स्वभाव.....133
अध्याय 25 ख्रीष्ट के नाम.....138
अध्याय 26 ख्रीष्ट की अवस्थाएँ.....143
अध्याय 27 ख्रीष्ट के पद.....149
अध्याय 28 ख्रीष्ट क्यों मरा?.....154
अध्याय 29 प्रतिस्थापनीय प्रायश्चित्त.....160
अध्याय 30 प्रायश्चित्त का विस्तार.....166

भाग पाँच: आत्माविज्ञान *(PNEUMATOLOGY)*

अध्याय 31 पुराने नियम में पवित्र आत्मा.....173
अध्याय 32 नए नियम में पवित्र आत्मा.....178
अध्याय 33 अधिवक्ता (सहायक).....182
अध्याय 34 पवित्र आत्मा का बपतिस्मा.....188
अध्याय 35 आत्मा के वरदान.....194
अध्याय 36 आत्मा का फल.....201
अध्याय 37 क्या आश्चर्यकर्म आज के लिए हैं?.....207

भाग छः: उद्धारविज्ञान *(SOTERIOLOGY)*

अध्याय 38 सामान्य अनुग्रह.....215
अध्याय 39 चुनाव और परित्यक्ति.....220
अध्याय 40 प्रभावशाली बुलाहट.....226
अध्याय 41 केवल विश्वास के द्वारा धर्मीकरण.....232
अध्याय 42 बचाने वाला विश्वास.....237
अध्याय 43 लेपालकपन और ख्रीष्ट के साथ मिलन.....242
अध्याय 44 पवित्रीकरण.....247
अध्याय 45 सन्तों का डटे रहना.....252

भाग सात: कलीसियाविज्ञान *(ECCLESIOLOGY)*

अध्याय 46 कलीसिया के बाइबलीय चित्र.....261
अध्याय 47 कलीसिया: एक तथा पवित्र.....265
अध्याय 48 कलीसिया: विश्वव्यापी तथा प्रेरितीय.....269
अध्याय 49 कलीसिया में आराधना.....274
अध्याय 50 कलीसिया की विधियाँ (संस्कार).....279
अध्याय 51 बपतिस्मा.....284
अध्याय 52 प्रभु भोज.....289

भाग आठ: युगान्तविज्ञान *(ESCHATOLOGY)*

अध्याय 53 मृत्यु और मध्यवर्ती अवस्था.....295
अध्याय 54 पुनरुत्थान.....299
अध्याय 55 परमेश्वर का राज्य.....305
अध्याय 56 सहस्राब्दी.....309
अध्याय 57 ख्रीष्ट का पुनःआगमन.....315
अध्याय 58 अन्तिम न्याय.....320
अध्याय 59 अनन्त दण्ड.....326
अध्याय 60 स्वर्ग और पृथ्वी का नया बनाया जाना.....331

परिशिष्ट विश्वास वचन.....337
विषय सूचकाँक.....341
वचन सूचकाँक.....351

भाग एक

परिचय

Introduction

अध्याय 1

ईश्वरविज्ञान क्या है?

What is Theology?

कई वर्षों पूर्व, एक जाने-माने मसीही महाविद्यालय ने मुझे उसके शिक्षकों और प्रबन्धकों को इस प्रश्न पर सम्बोधित करने के लिए आमन्त्रित किया कि: "एक मसीही महाविद्यालय या विश्वविद्यालय क्या है?" मेरे आगमन पर, महाविद्यालय के अध्यक्ष ने मुझे परिसर का भ्रमण कराया। भ्रमण के समय, मैंने कुछ कार्यालयों के द्वारों पर यह अभिलेख पाया, "धर्म विभाग।" संध्या के समय जब शिक्षकों को सम्बोधित करने का समय आया, तो मैंने उस अभिलेख का उल्लेख किया जिसे मैंने देखा था, और मैंने पूछा क्या उस विभाग का नाम सदैव यही था? एक वरिष्ठ शिक्षक ने उत्तर दिया कि वर्षों पहले उस विभाग को "ईश्वरविज्ञान का विभाग" कहा जाता था। किन्तु कोई भी मुझे नहीं बता पाया कि उस विभाग का नाम क्यों बदल दिया गया।

"धर्म" या "ईश्वरविज्ञान"—इससे क्या अन्तर पड़ता है? शैक्षणिक जगत में धर्म का अध्ययन परम्परागत रूप से समाजशास्त्र या फिर नृविज्ञान *(anthropology)* के व्यापक सन्दर्भ के अन्तर्गत आता है, क्योंकि धर्म, विशेष परिस्थितियों में मनुष्यों की आराधना की रीतियों से सम्बन्ध रखता है। इसके विपरीत ईश्वरविज्ञान, परमेश्वर का अध्ययन है। इस बात का अध्ययन करने में कि धर्म के विषय में मनुष्य के क्या विचार हैं तथा परमेश्वर के स्वभाव व चरित्र का अध्ययन करने में बड़ा ही अन्तर है। पहला तो अपनी सोच में पूर्णतः प्राकृतिक है। दूसरा तो अलौकिक है, क्योंकि वह उन बातों का अध्ययन करता है, जो इस संसार की वस्तुओं से परे हैं और ऊपर हैं।

अपने उपदेश में शिक्षकों को यह समझाने के पश्चात्, मैंने यह भी कहा कि एक सच्चा मसीही महाविद्यालय या विश्वविद्यालय, इस विचार के प्रति समर्पित होता है कि परमेश्वर का सत्य ही सर्वश्रेष्ठ सत्य है, और यह भी कि वही अन्य सभी सत्य की नींव और स्रोत है। हम जो कुछ भी

सीखते हैं—अर्थशास्त्र, दर्शनशास्त्र, जीवविज्ञान, गणित—उसे हमें परमेश्वर के चरित्र की व्यापक वास्तविकता के प्रकाश में समझना चाहिए। इसीलिए मध्य युग में, ईश्वरविज्ञान को "विज्ञान की रानी" तथा दर्शनशास्त्र को "उसकी दासी" कहा जाता था। किन्तु आज रानी को उसकी राज-गद्दी से हटाया जा चुका है, तथा कई प्रकरणों में, उसे निर्वासन में भेजा जा चुका है, और अब उसके स्थान पर, एक हड़पनेवाला शासन कर रहा है। हमने ईश्वरविज्ञान को धर्म के साथ प्रतिस्थापित कर दिया है।

ईश्वरविज्ञान की परिभाषा

इस पुस्तक में, हम ईश्वरविज्ञान की बात कर रहे हैं, विशेष कर विधिवत् ईश्वरविज्ञान *(Systematic Theology)* की जो मसीही विश्वास के मुख्य सिद्धान्तों का एक सुव्यवस्थित, सुसंगत अध्ययन है। इस अध्याय में, मैं विधिवत् ईश्वरविज्ञान के विज्ञान का संक्षिप्त परिचय तथा कुछ आधारभूत परिभाषाएँ दूँगा।

ईश्वरविज्ञान शब्द में प्रत्यय है, *विज्ञान,* जो अन्य विद्याशाखाओं *(disciplines)* और विज्ञानों के नामों में भी पाया जाता है, जैसे कि *जीवविज्ञान, शरीरविज्ञान,* और *नृविज्ञान।* यह प्रत्यय यूनानी शब्द *लोगोस (logos)* से आता है, जिसे हम यूहन्ना के सुसमाचार के आरम्भ में पाते हैं: "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था" (यूहन्ना 1:1)। यूनानी शब्द *लोगोस* का अर्थ है "वचन" या "विचार," या फिर "तर्क," जैसा कि इस प्रकार एक दार्शनिक ने इसका अनुवाद किया है (इसी शब्द से हम अंग्रेज़ी का शब्द *लौजिक-logic* अर्थात् तर्क भी प्राप्त करते हैं)। तो जब हम जीवविज्ञान का अध्ययन करते हैं, हम जीवन के शब्द या तर्क को देख रहे हैं। नृविज्ञान मनुष्यों के विषय में शब्द या तर्क है, क्योंकि यूनानी में *ऐन्थ्रोपोस* शब्द का अर्थ *मनुष्य* है। ईश्वरविज्ञान का पहला भाग यूनानी शब्द *थीयोस (theos)* से आता है, जिसका अर्थ "ईश्वर" है, तो ईश्वरविज्ञान स्वयं परमेश्वर का शब्द या तर्क है।

ईश्वरविज्ञान एक बहुत व्यापक शब्द है। यह केवल परमेश्वर को ही नहीं सन्दर्भित करता है परन्तु उन सब विषयों को जिसे परमेश्वर ने हम पर पवित्रशास्त्र में प्रकट किया है। ख्रीष्ट का अध्ययन, ईश्वरविज्ञान के विषय के अन्तर्गत होता है जिसे हम "ख्रीष्टविज्ञान" *(Christology)* कहते हैं। इसमें पवित्र आत्मा का अध्ययन भी सम्मिलित है जिसे हम "आत्माविज्ञान" *(Pneumatology)* कहते हैं, पाप का अध्ययन जिसे "पापविज्ञान" *(Hamartiology)* कहा जाता है, और भविष्य की बातों का अध्ययन जिसे हम "युगान्तविज्ञान" *(Eschatology)* कहते हैं। ये ईश्वरविज्ञान की उपशाखाएँ हैं। ईश्वरविज्ञानी "ईश्वरविज्ञान विशिष्ट" *(Theology Proper)* की भी बात करते हैं, जिसका विशेष सन्दर्भ स्वयं परमेश्वर के अध्ययन से है।

कई लोग *ईश्वरविज्ञान* शब्द से सन्तुष्ट रहते हैं परन्तु जब वे विशेषक शब्द *विधिवत्* को सुनते हैं

तो वे असहज हो जाते हैं। यह इसलिए है, क्योंकि हम एक ऐसे समय में रहते हैं, जिसमें कुछ प्रकार की प्रणालियों के प्रति व्यापक विरोध है। हम निर्जीव प्रणालियों का आदर करते हैं—कम्प्यूटर प्रणालियाँ, अग्नि चेतावनी प्रणालियाँ, और विद्युत्-परिपथ प्रणालियाँ—क्योंकि हम समाज के लिए इनके महत्व को समझते हैं। किन्तु जब वैचारिक प्रणालियों या जीवन और संसार को सुसंगत रीति से समझने की बात आती है, तो लोग असहज होते हैं। इस प्रकार की सोच का एक कारण है अस्तित्ववाद *(Existentialism)*—जो कि पाश्चात्य इतिहास में एक सबसे अधिक प्रभावशाली दर्शन बन के उभरा था।

दर्शनशास्त्र का प्रभाव

अस्तित्ववाद, अस्तित्व का एक दर्शन है। इसकी पूर्वधारणा यह है कि सारतात्विक *(essential)* सत्य जैसा कुछ भी नहीं है; इसके विपरीत, केवल विशेष *(distinctive)* अस्तित्व है—सारतत्त्व *(essence)* नहीं, किन्तु अस्तित्व *(existence)* है। परिभाषा के अनुसार, अस्तित्ववाद वास्तविकता की सामान्य *(generic)* तन्त्र-प्रणाली से घृणा करता है। यह एक प्रणाली-विरोधी *(anti-system)* विचारधारा है, जो अनेक सत्यों को तो स्वीकारती है, किन्तु *सत्य* को नहीं तथा उद्देश्यों को तो स्वीकारती है किन्तु *उद्देश्य* को नहीं। अस्तित्ववादी *(Existentialists)* यह विश्वास नहीं करते हैं कि वास्तविकता को व्यवस्थित रीति से समझा जा सकता है क्योंकि वे संसार को अन्ततः अस्त-व्यस्त और अर्थहीन या उद्देश्यहीन होने के दृष्टिकोण से देखते हैं। एक व्यक्ति जीवन को केवल वैसे जीता है, जैसे उसका उससे सामना होता है; इसमें सब बातों को अर्थ प्रदान करने के लिए कोई व्यापक दृष्टिकोण नहीं है, क्योंकि अन्ततः जीवन अर्थहीन है।

पाश्चात्य सभ्यता पर इसकी सन्तानों सापेक्षवाद *(Relativism)* और अनेकवाद *(Pluralism)* के साथ, अस्तित्ववाद का अत्यन्त प्रभाव पड़ा है। सापेक्षवादी *(Relativist)* कहता है, "इस मूल सत्य को छोड़ कर कोई भी मूल सत्य नहीं है कि मूलतः कोई मूल सत्य नहीं है। सभी सत्य सापेक्षिक हैं। जो एक के लिए सत्य है वही दूसरे के लिए झूठ हो सकता है।" विपरीत दृष्टिकोण में तालमेल लाने के लिए कोई प्रयास नहीं किया जाता है (जिसे कोई भी प्रणाली अवश्य करना चाहेगी) क्योंकि, सापेक्षवादियों के अनुसार, सत्य को विधिवत् रीति से समझना असम्भव है।

इस प्रकार के दर्शनशास्त्र ने, यहाँ तक कि धर्मविद्यालयों *(seminaries)* में भी ईश्वरविज्ञान पर गहरा प्रभाव डाला है। विधिवत् ईश्वरविज्ञान न केवल अस्तित्ववादी विचार, सापेक्षवाद और अनेकवाद के प्रभाव के कारण तीव्र गति से भूला बिसरा हुआ विषय बनता जा रहा है, किन्तु इसलिए भी क्योंकि कुछ लोगों की त्रुटिपूर्ण विचारधारा है कि विधिवत् ईश्वरविज्ञान, बाइबल को एक दार्शनिक प्रणाली में बलपूर्वक ढालने का प्रयास है। कुछ लोगों ने बाइबल को दार्शनिक प्रणाली में बलपूर्वक ढालने का प्रयास *किया है,* उदाहरण के लिए, *रेने डेकार्ट (René Descartes)* और उसके तर्कबुद्धिवाद *(Rationalism)* तथा *जॉन लॉक (John Locke)* और उसके

We want to see men and women around the world connect the deep truths of the Christian faith to everyday life.

Order your copy of this title, download the digital version, or browse thousands of resources at ***Ligonier.org****.*

LIGONIER MINISTRIES